दादा भगवान प्ररूपित

एडजस्ट एवरीव्हेयर

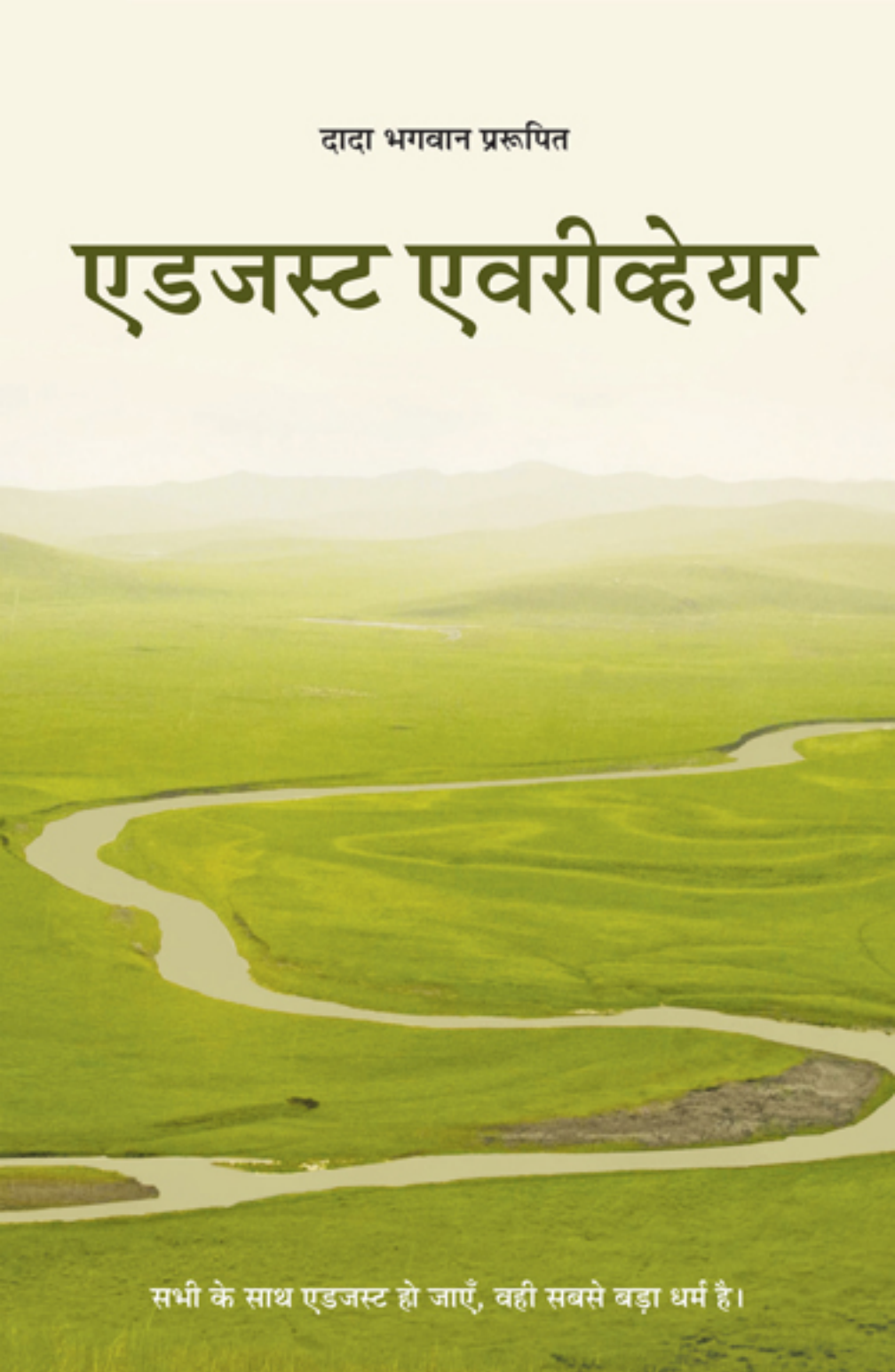

सभी के साथ एडजस्ट हो जाएँ, वही सबसे बड़ा धर्म है।

दादा भगवान प्ररूपित

एडजस्ट एवरीव्हेयर

संकलन : डॉ. नीरुबहन अमीन

प्रकाशक : श्री अजीत सी. पटेल
महाविदेह फाउन्डेशन
5, ममतापार्क सोसायटी, नवगुजरात कॉलेज के पीछे,
उस्मानपुरा, अहमदाबाद - ३८० ०१४, गुजरात.
फोन - (०७९) २७५४०४०८

©
All Rights reserved - Dr. Niruben Amin
Trimandir, Simandhar City,
Ahmedabad-Kalol Highway, Post - Adalaj,
Dist.-Gandhinagar-382421, Gujarat, India.

अब तक प्रिन्ट हुए दस संस्करण: प्रतियाँ ६६,६०० १९९७ से नवम्बर, २०११ तक
ग्यारहवाँ संस्करण : प्रतियाँ ५,००० फरवरी २०१३

भाव मूल्य : 'परम विनय' और
'मैं कुछ भी जानता नहीं', यह भाव!

द्रव्य मूल्य : ५ रुपये

लेज़र कम्पोजिंग : दादा भगवान फाउन्डेशन, अहमदाबाद

मुद्रक : महाविदेह फाउन्डेशन
पार्श्वनाथ चैम्बर्स, नये रिज़र्व बैंक के पास,
इन्कमटैक्स, अहमदाबाद-३८० ०१४.
फोन : (०७९) २७५४२९६४, २७५४०२१६

– त्रिमंत्र –

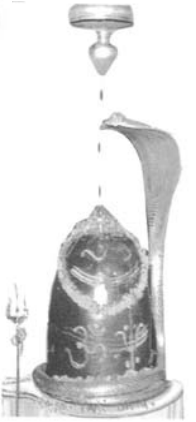

नमो अरिहंताणं
नमो सिद्धाणं
नमो आयरियाणं
नमो उवज्झायाणं
नमो लोए सव्वसाहूणं
एसो पंच नमुक्कारो,
सव्व पावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवइ मंगलम्॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
ॐ नमः शिवाय ॥ ३ ॥
जय सच्चिदानंद

'दादा भगवान' कौन ?

जून १९५८ की एक संध्या का करीब छः बजे का समय, भीड़ से भरा सूरत शहर का रेल्वे स्टेशन, प्लेटफार्म नं. 3 की बेंच पर बैठे श्री अंबालाल मूलजीभाई पटेल रूपी देहमंदिर में कुदरती रूप से, अक्रम रूप में, कई जन्मों से व्यक्त होने के लिए आतुर 'दादा भगवान' पूर्ण रूप से प्रकट हुए। और कुदरत ने सर्जित किया अध्यात्म का अद्‌भुत आश्चर्य। एक घंटे में उन्हें विश्वदर्शन हुआ। 'मैं कौन? भगवान कौन? जगत् कौन चलाता है? कर्म क्या? मुक्ति क्या?' इत्यादि जगत् के सारे आध्यात्मिक प्रश्नों के संपूर्ण रहस्य प्रकट हुए। इस तरह कुदरत ने विश्व के सम्मुख एक अद्वितीय पूर्ण दर्शन प्रस्तुत किया और उसके माध्यम बने श्री अंबालाल मूलजीभाई पटेल, गुजरात के चरोतर क्षेत्र के भादरण गाँव के पाटीदार, कॉन्ट्रैक्ट का व्यवसाय करनेवाले, फिर भी पूर्णतया वीतराग पुरुष!

'व्यापार में धर्म होना चाहिए, धर्म में व्यापार नहीं', इस सिद्धांत से उन्होंने पूरा जीवन बिताया। जीवन में कभी भी उन्होंने किसीके पास से पैसा नहीं लिया, बल्कि अपनी कमाई से भक्तों को यात्रा करवाते थे।

उन्हें प्राप्ति हुई, उसी प्रकार केवल दो ही घंटों में अन्य मुमुक्षु जनों को भी वे आत्मज्ञान की प्राप्ति करवाते थे, उनके अद्‌भुत सिद्ध हुए ज्ञानप्रयोग से। उसे अक्रम मार्ग कहा। अक्रम, अर्थात् बिना क्रम के, और क्रम अर्थात् सीढ़ी दर सीढ़ी, क्रमानुसार ऊपर चढ़ना। अक्रम अर्थात् लिफ्ट मार्ग, शॉर्ट कट।

वे स्वयं प्रत्येक को 'दादा भगवान कौन?' का रहस्य बताते हुए कहते थे कि ''यह जो आपको दिखते हैं वे दादा भगवान नहीं है, वे तो 'ए.एम.पटेल' है। हम ज्ञानी पुरुष हैं और भीतर प्रकट हुए हैं, वे 'दादा भगवान' हैं। दादा भगवान तो चौदह लोक के नाथ हैं। वे आप में भी हैं, सभी में हैं। आपमें अव्यक्त रूप में रहे हुए हैं और 'यहाँ' हमारे भीतर संपूर्ण रूप से व्यक्त हुए हैं। दादा भगवान को मैं भी नमस्कार करता हूँ।''

दादा भगवान फाउन्डेशन के द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

हिन्दी

१. ज्ञानी पुरुष की पहचान
२. सर्व दु:खों से मुक्ति
३. कर्म का सिद्धांत
४. आत्मबोध
५. मैं कौन हूँ ?
६. वर्तमान तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी
७. भुगते उसी की भूल
८. एडजस्ट एवरीव्हेयर
९. टकराव टालिए
१०. हुआ सो न्याय
११. चिंता
१२. क्रोध
१३. प्रतिक्रमण
१४. दादा भगवान कौन ?
१५. पैसों का व्यवहार
१६. अंत:करण का स्वरूप
१७. जगत कर्ता कौन ?
१८. त्रिमंत्र
१९. भावना से सुधरे जन्मोंजन्म
२०. प्रेम
२१. माता-पिता और बच्चों का व्यवहार
२२. समझ से प्राप्त ब्रह्मचर्य
२३. दान
२४. मानव धर्म
२५. सेवा-परोपकार
२६. मृत्यु समय, पहले और पश्चात
२७. निजदोष दर्शन से... निर्दोष
२८. पति-पत्नी का दिव्य व्यवहार
२९. क्लेश रहित जीवन
३०. गुरु-शिष्य
३१. अहिंसा
३२. सत्य-असत्य के रहस्य
३३. चमत्कार
३४. पाप-पुण्य
३५. वाणी, व्यवहार में...
३६. कर्म का विज्ञान
३७. आप्तवाणी - १
३८. आप्तवाणी - ३
३९. आप्तवाणी - ४
४०. आप्तवाणी - ५
४१. आप्तवाणी - ८

★ **दादा भगवान फाउन्डेशन के द्वारा गुजराती भाषा में भी ५५ पुस्तकें प्रकाशित हुई है। वेबसाइट www.dadabhagwan.org पर से भी आप ये सभी पुस्तकें प्राप्त कर सकते हैं।**

★ **दादा भगवान फाउन्डेशन के द्वारा हर महीने हिन्दी, गुजराती तथा अंग्रेजी भाषा में ''दादावाणी'' मैगेज़ीन प्रकाशित होता है।**

संपादकीय

जीवन में हर एक अवसर पर हम खुद ही समझपूर्वक सामनेवाले को एडजस्ट नहीं होंगे तो भयानक टकराव होता ही रहेगा। जीवन विषमय हो जाएगा और आखिर में तो जगत् ज़बरदस्ती हमारे पास एडजस्टमेन्ट करवाएगा ही। इच्छा हो या अनिच्छा, हमें जहाँ-तहाँ एडजस्ट तो होना ही पड़ेगा। तो फिर समझ-बूझकर ही क्यों नहीं एडजस्ट हों कि, जिससे कई टकराव टाल सकें और सुख-शांति स्थापित हो।

लाइफ़ इज़ नथिंग बट एडजस्टमेन्ट (जीवन एडजस्टमेन्ट के सिवा और कुछ भी नहीं !) जन्म से मृत्यु तक एडजस्टमेन्ट्स लेने होंगे। फिर चाहे रोकर लें या हँसकर ! पढ़ाई पसंद हो या नहीं हो, लेकिन एडजस्ट होकर पढ़ना ही होगा ! शादी के समय शायद खुशी-खुशी ब्याहें, मगर शादी के बाद सारा जीवन पति-पत्नी को पारस्परिक एडजस्टमेन्ट्स लेने ही होंगे। दो भिन्न प्रकृतियों को सारा जीवन साथ रहकर, जो पाला पड़ा हो उसे निभाना पड़ता है। इसमें एक-दूसरें से सारा जीवन पूर्णतया एडजस्ट होकर रहें, ऐसे कितने पुण्यवंत लोग होंगे इस काल में? अरे, रामचंद्रजी और सीताजी को भी कई बार डिसएडजस्टमेन्ट नहीं हुए थे? स्वर्णमृग, अग्नि परीक्षा और सगर्भा होते हुए भी बनवास? उन्होंने कैसे-कैसे एडजस्टमेन्ट लिए होंगे?

माता-पिता और संतानों के साथ तो क़दम-क़दम पर एडजस्टमेन्टस नहीं लेने पड़ते क्या? यदि समझदारी से एडजस्ट हो जाएँ तो शांति रहेगी और कर्म नहीं बँधेंगे। परिवार में मित्रों के साथ, धंधे में बॉस के साथ, व्यापारी या दलालों के साथ, तेजी-मंदी की हवा के साथ, सभी जगह यदि हम एडजस्टमेन्ट नहीं लेंगे तो कितने सारे दु:खों का ढेर लग जाएगा!

इसलिए 'एडजस्ट एवरीव्हेर' की 'मास्टर की' लेकर जो मनुष्य जीवन व्यतीत करेगा, उसके जीवन का कोई ताला नहीं खुले, ऐसा नहीं होगा। ज्ञानीपुरुष परम पूजनीय दादाश्री का स्वर्णिम सूत्र 'एडजस्ट एवरीव्हेर' जीवन में आत्मसात कर लें तो संसार सुखमय हो जाए!

डॉ. नीरूबहन अमीन के जय सच्चिदानंद

एडजस्ट एवरीव्हेर

पचाओ एक ही शब्द

प्रश्नकर्ता : अब तो जीवन में शांति का सरल मार्ग चाहते हैं।

दादाश्री : एक ही शब्द जीवन में उतारोगे, ठीक से, एक्ज़ेक्ट?

प्रश्नकर्ता : एक्ज़ेक्ट, हाँ।

दादाश्री : 'एडजस्ट एवरीव्हेर' इतना ही शब्द यदि आप जीवन में उतार लोगे तो बहुत हो गया। आपको शांति अपने आप प्राप्त होगी। शुरूआत में छः महीनों तक अड़चनें आएँगी, बाद में अपने आप ही शांति हो जाएगी। पहले छः महीनों तक पिछले रिएक्शन आएँगे, देर से शुरूआत करने की वजह से । इसलिए 'एडजस्ट एवरीव्हेर'! इस कलियुग के ऐसे भयंकर काल में यदि एडजस्ट नहीं हुए न, तो खत्म हो जाओगे!

संसार में और कुछ नहीं आए तो हर्ज नहीं लेकिन एडजस्ट होना तो आना ही चाहिए। सामनेवाला 'डिसएडजस्ट' होता रहे, पर आप एडजस्ट होते रहोगे तो संसार-सागर तैरकर पार उतर जाओगे। जिसे दूसरों को अनुकूल होना आया, उसे कोई दुःख ही नहीं रहता। 'एडजस्ट एवरीव्हेर'! प्रत्येक के साथ एडजस्टमेन्ट हो जाए, यही सब से बड़ा धर्म है। इस काल में तो भिन्न-भिन्न प्रकृतियाँ, इसलिए एडजस्ट हुए बिना कैसे चलेगा?

बखेड़ा मत करना, एडजस्ट हो जाना

संसार का अर्थ ही समसरण मार्ग, इसलिए निरंतर परिवर्तन होता ही रहता है। जब कि ये बुज़ुर्ग पुराने ज़माने को ही पकड़े रहते हैं। अरे, ज़माने के साथ चल, वर्ना मार खाकर मर जाएगा! ज़माने के अनुसार एडजस्टमेन्ट लेना होगा। मेरा तो चोर के साथ, जेबकतरे के साथ, सबके साथ एडजस्टमेन्ट होता है। यदि हम चोर के साथ बात करें तो वह भी जान जाता है कि ये करुणावाले हैं। हम उसे 'तू गलत है' ऐसा नहीं कहते। क्योंकि वह उसका 'व्यू पोइन्ट' (दृष्टिबिन्दु) है। जब कि लोग उसे 'नालायक' कहकर गालियाँ देते हैं। क्या ये वकील झूठे नहीं है? 'बिल्कुल झूठा केस जितवा दूँगा' जो ऐसा कहें, क्या वे ठग नहीं कहलाएँगे? चोर को 'लुच्चा' कहें और बिल्कुल झूठे केस को 'सच्चा' कहें, उनका संसार में विश्वास कैसे कर सकते हैं? फिर भी, उनका भी चलता है न? किसीको भी हम झूठा नहीं कहते। वह अपने 'व्यू पोइन्ट' से करेक्ट ही है। लेकिन उसे सही बात समझाएँ कि यह जो तू चोरी करता है, उसका फल तुझे क्या मिलेगा!

ये बुज़ुर्ग लोग घर में घुसते ही कहते हैं, 'यह लोहे की अलमारी? यह रेडियो? यह ऐसा क्यों? वैसा क्यों?' ऐसे बखेड़ा करते हैं। अरे, किसी जवान से दोस्ती कर। यह युग तो बदलता ही रहेगा। इनके बगैर ये जीएँ कैसे? कुछ नया देखा कि मोह होगा। नवीन नहीं होगा तो जीएँगे किस तरह? ऐसा नवीन तो अनंत बार आया और गया, उसमें आपको बखेड़ा नहीं करना चाहिए। आपको अनुकूल नहीं आए तो आप मत करो। यह आइसक्रीम हम से नहीं कहती कि मुझ से दूर रहो। आपको नहीं खाना हो तो मत खाओ। लेकिन ये बुज़ुर्ग लोग तो उस पर चिढ़ते रहते हैं। ये मतभेद तो युग परिवर्तन के हैं। ये बच्चे तो ज़माने के अनुसार चलेंगे। मोह, यानी नया-नया उत्पन्न होता है और नया-नया ही दिखता है। हमने बचपन से ही बुद्धि से बहुत सोच लिया था कि यह संसार उल्टा हो रहा है या सीधा हो रहा है और यह भी समझ में आ गया कि, इस संसार को बदलने की किसी की सत्ता ही नहीं है। फिर भी हम क्या कहते हैं कि ज़माने के अनुसार एडजस्ट हो जाओ। लड़का नयी टोपी

पहनकर आए, तब ऐसा मत कहना कि, 'ऐसी कहाँ से ले आया?' उसके बजाय एडजस्ट हो जाएँ कि, 'इतनी अच्छी टोपी कहाँ से लाया? कितने में लाया? बहुत सस्ती मिली?' इस प्रकार एडजस्ट हो जाना।

अपना धर्म क्या कहता है कि असुविधा में सुविधा देखो। रात में मुझे विचार आया कि, 'यह चद्दर मैली है।' लेकिन फिर एडजस्टमेन्ट ले लिया तो फिर इतनी मुलायम महसूस हुई कि न पूछो। पंचेन्द्रिय ज्ञान असुविधा दिखाता है और आत्मज्ञान सुविधा दिखाता है। इसलिए आत्मा में रहो।

दुर्गंध के साथ एडजस्टमेन्ट

बांद्रा की खाड़ी में से दुर्गंध आए, तो उसके साथ क्या लड़ने जाएँगे? इसी प्रकार ये मनुष्य भी दुर्गंध फैलाते हैं, उन्हें कुछ कहने जाएँगे? दुर्गंध फैलाए वे सभी खाड़ियाँ कहलाती हैं और जिनमें से सुगंध आए वे बाग़ कहलाते हैं। जो-जो दुर्गंध देते हैं, वे सभी कहते हैं कि 'आप हमारे प्रति वीतराग रहो!'

यह तो अच्छा-बुरा कहने से वे हमें सताते हैं। हमें तो दोनों को समान कर देना है। इसे 'अच्छा' कहा, इसलिए वह 'बुरा' हुआ। तब फिर वह सताता है। लेकिन दोनों का 'मिक्स्चर' कर डालें, तो फिर असर नहीं रहता। 'एडजस्ट एवरीव्हेर' की हमने खोजबीन की है। सच बोल रहा हो उसके साथ भी और कोई झूठ बोल रहा हो उसके साथ भी 'एडजस्ट' हो जा। हमें कोई कहे कि 'आपमें अक़्ल नहीं है।' तब हम तुरंत उससे एडजस्ट हो जाएँगे और उसे कहेंगे कि, 'वह तो पहले से ही नहीं थी। आज तू कहाँ से खोजने आया है? तुझे तो आज मालूम हुआ, लेकिन मैं तो यह बचपन से ही जानता हूँ।' ऐसा कहें तो झंझट मिट जाएगा न? फिर वह हमारे पास अक़्ल खोजने ही नहीं आएगा। ऐसा नहीं करें तो 'अपने घर' (मोक्ष) कब पहुँचेंगे?

पत्नी के साथ एडजस्टमेन्ट

प्रश्नकर्ता : एडजस्ट कैसे होना चाहिए, यह ज़रा समझाइए।

दादाश्री : हमें किसी कारणवश देर हो गई, और पत्नी कुछ उल्टा-सुल्टा बोलने लगे कि , 'इतनी देर से आए हो? मुझे ऐसा नहीं चलेगा।' और जैसा-तैसा कहे... उसका दिमाग़ फिर जाए। तब आप कहना कि 'हाँ, तेरी बात सही है, तू कहे तो वापस चला जाऊँ और तू कहे तो अंदर आकर बैठूँ।' तब वह कहे, 'नहीं, वापस मत जाना। यहाँ सो जाओ चुपचाप।' लेकिन फिर पूछो, 'तू कहे तो खाऊँ, वर्ना सो जाऊँ।' तब वह कहे, 'नहीं, खा लो।' तब आपको उसका कहा मानकर खा लेना चाहिए। अर्थात् एडजस्ट हो गए। फिर सुबह फर्स्ट क्लास चाय देगी और अगर धमकाया तो फिर चाय का कप मुँह फुलाकर देगी और तीन दिन तक जारी रहेगा वही सिलसिला।

खाओ खिचड़ी या होटल के पिज्ज़ा?

एडजस्ट होना नहीं आए तो क्या करते हैं? लोग वाइफ के साथ झगड़ा करते हैं न?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : ऐसा?! क्या बँटवारे के लिए? वाइफ के साथ क्या बाँटना हैं? जायदाद तो साझेदारी में है।

प्रश्नकर्ता : पति को गुलाबजामुन खाने हों और बीबी खिचड़ी बनाए, तो फिर झगड़ा होता है।

दादाश्री : फिर झगड़ा करने के बाद क्या वह गुलाबजामुन बनाएगी? नहीं। बाद में भी खिचड़ी ही खानी पड़ती है!

प्रश्नकर्ता : फिर होटल से पिज्ज़ा मँगवाते हैं।

दादाश्री : ऐसा?! अर्थात् यह भी गया और वह भी गया। पिज्ज़ा आ जाते हैं, नहीं?! लेकिन हमारे गुलाबजामुन तो गए न? उसके बजाय अगर आपने वाइफ से कहा हो कि, 'तुम्हें जो अनुकूल हो वह बनाओ।' उसे भी किसी दिन खिलाने की भावना तो होगी न! वह खाना नहीं खाएगी? तब आप कहना, 'तुम्हें अनुकूल आए वह बनाना।' तब वह कहेगी, 'नहीं, आपको जो

अनुकूल आए, वह बनाना है।' तब आप कहना कि, 'गुलाबजामुन बनाओ।' और अगर आप पहले से ही गुलाबजामुन बनाने को कहो तो वह बोलेगी, 'नहीं, मैं तो खिचड़ी बनाऊँगी।'

प्रश्नकर्ता : ऐसे मतभेद बंद करने के लिए आप कौन सा रास्ता बताते हैं ?

दादाश्री : मैं तो यही रास्ता दिखाता हूँ कि, 'एडजस्ट एवरीव्हेर'। वह कहे कि, 'खिचड़ी बनानी है', तो आप 'एडजस्ट' हो जाना। और आप कहो कि, 'नहीं, अभी हमें बाहर जाना है, सत्संग में जाना है', तो उसे 'एडजस्ट' हो जाना चाहिए। जो पहले बोले, उसके साथ एडजस्ट हो जाओ।

प्रश्नकर्ता : तब तो पहले बोलने के लिए झगड़े होंगे।

दादाश्री : हाँ, ऐसा करना। ऐसा करना मगर उससे 'एडजस्ट' हो जाना। क्योंकि तेरे हाथ में सत्ता नहीं है। वह सत्ता किसके हाथ में है, वह मैं जानता हूँ। तो फिर इसमें 'एडजस्ट' हो जाने में आपको कोई हर्ज है भैया ?

प्रश्नकर्ता : नहीं, बिल्कुल भी नहीं।

दादाश्री : बहनजी, आपको हर्ज है?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : तब फिर उसका *निकाल* कर दो न! 'एडजस्ट एवरीव्हेर'! इसमें कोई हर्ज है?

प्रश्नकर्ता : नहीं, बिल्कुल भी नहीं।

दादाश्री : अगर वह पहले कहे कि, आज प्याज के पकौड़े, लड्डू, सब्जी, सब बनाओ, तब आप एडजस्ट हो जाना और आप कहो कि आज जल्दी सो जाना है तो उन्हें एडजस्ट हो जाना चाहिए। (पति से) आपको किसी दोस्त के वहाँ जाना हो, फिर भी मुल्तवी करके जल्दी सो जाना। क्योंकि दोस्त के साथ झमेला होगा तो देखा जाएगा, लेकिन यहाँ घर में मत

होने देना। दोस्त के साथ अच्छा रखने के लिए घर में झंझट करते हैं, ऐसा नहीं होना चाहिए। अर्थात् वह पहले बोले तो आपको एडजस्ट हो जाना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : लेकिन उन्हें आठ बजे कहीं मिटिंग में जाना हो और पत्नी कहे कि, 'अब सो जाइए', तब फिर वे क्या करें?

दादाश्री : ऐसी कल्पनाएँ नहीं करनी हैं। कुदरत का नियम ऐसा है कि 'व्हेर देयर इज़ ए विल, देयर इज़ ए वे' (जहाँ चाह, वहाँ राह!) कल्पना करोगे तो बिगड़ेगा। उस दिन वे ही कहेंगी कि 'आप जल्दी जाओ, जल्दी जाओ' खुद गेरेज तक छोड़ने आएगी, कल्पना करने से सब बिगड़ता है। इसीलिए एक पुस्तक में लिखा है, 'व्हेर देयर इज़ विल, देयर इज़ वे' पालन करोगे तो बहुत हो गया। पालन करोगे न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, जी।

दादाश्री : लो, प्रोमिस दो। अरे वाह! इसे कहते हैं शूरवीर! प्रोमिस दिया !!

भोजन में एडजस्टमेन्ट

व्यवहार निभाया किसे कहेंगे कि जो 'एडजस्ट एवरीव्हेर' हुआ! अब डिवेलपमेन्ट का ज़माना आया है। मतभेद नहीं होने देना। इसलिए अभी लोगों को मैंने सूत्र दिया है, 'एडजस्ट एवरीव्हेर'! एडजस्ट, एडजस्ट, एडजस्ट। कढ़ी खारी बनी तो समझ लेना कि दादाजी ने एडजस्टमेन्ट लेने को, कहा है। फिर कढ़ी थोड़ी सी खा लेना। हाँ, अचार याद आए तो फिर मँगवा लेना कि थोड़ा सा अचार ले आओ। लेकिन झगड़ा नहीं, घर में झगड़ा नहीं होना चाहिए। खुद किसी जगह मुसीबत में फँस जाए, तब वहाँ खुद ही एडजस्टमेन्ट कर ले, तो भी संसार सुंदर लगे।

नहीं भाए तब भी निभाओ

तेरे साथ जो-जो डिसएडजस्ट होने आए, उसके साथ तू एडजस्ट हो जा। दैनिक जीवन में यदि सास-बहू के बीच या देवरानी-जेठानी के बीच

डिसएडजस्टमेन्ट होता हो, तो जिसे इस संसार के घटनाचक्र से छूटना हो, तो उसे एडजस्ट हो ही जाना चाहिए। पति-पत्नी में से यदि कोई एक, दरार डाले, तो दूसरे को जोड़ लेना चाहिए, तभी संबंध निभेगा और शांति रहेगी। जिसे एडजस्टमेन्ट लेना नहीं आता, उसे लोग मेन्टल कहते हैं। इस रिलेटिव सत्य में आग्रह, ज़िद करने की ज़रा सी भी ज़रूरत नहीं है। 'मनुष्य' तो कौन, कि जो एवरीव्हेर एडजस्टेबल हो। चोर के साथ भी एडजस्ट हो जाना चाहिए।

सुधारें या एडजस्ट हो जाएँ?

हर बात में हम सामनेवाले के साथ एडजस्ट हो जाएँ तो कितना सारा सरल हो जाए! हमें साथ में क्या ले जाना है? कोई कहेगा कि, 'भैया, बीवी को सीधा कर दो।' 'अरे, उसे सीधी करने जाएगा तो तू टेढ़ा हो जाएगा।' इसलिए वाइफ को सीधी करने मत बैठना, जैसी भी हो उसे करेक्ट कहना। आपका उसके साथ सदा का लेन-देन हो तो अलग बात है, यह तो एक जन्म, फिर न जाने कहाँ खो जाएगी। दोनों के मृत्युकाल अलग, दोनों के कर्म अलग! कुछ लेना भी नहीं -देना भी नहीं! यहाँ से वह किसके वहाँ जाएँगी, उसका क्या ठिकाना ? आप उसे सीधी करो और अगले जनम में जाए किसी और के हिस्से में!

इसलिए न तो आप उसे सीधी करो और न ही वह आपको सीधा करे। जैसा भी मिला, सोने जैसा। प्रकृति किसी की कभी भी सीधी नहीं हो सकती। कुत्ते की दुम टेढ़ी की टेढ़ी ही रहती है। इसलिए आप सावधान रहकर चलो। जैसी है वैसी ठीक है, 'एडजस्ट एवरीव्हेर'।

पत्नी तो है 'काउन्टर वेट'

प्रश्नकर्ता : मैं वाइफ के साथ एडजस्ट होने की बहुत कोशिश करता हूँ, लेकिन एडजस्टमेन्ट नहीं हो पाता।

दादाश्री : यह सब हिसाब के अनुसार है! टेढ़ा बोल्ट और टेढ़ा नट, वहाँ चाकी सीधी घुमाने से कैसे काम चलेगा? आपको ऐसा होता होगा कि

यह स्त्री जाति ऐसी क्यों है? लेकिन स्त्री जाति तो आपका 'काउन्टर वेट' है। जितना आपका दोष, उतनी वह टेढ़ी; इसीलिए तो सब 'व्यवस्थित' है, ऐसा हमने कहा है न?

प्रश्नकर्ता : सभी हमें सीधा करने आए हैं, ऐसा लगता है।

दादाश्री : वह तो आपको सीधा करना ही चाहिए। सीधे हुए बगैर दुनिया चलती नहीं न? सीधा नहीं होगा तो फिर बाप कैसे बनेगा? सीधा होगा तभी बाप बनेगा। स्त्री जाति कुछ ऐसी है कि वह नहीं बदलेगी, इसलिए हमें बदलना होगा। वह सहज जाति है, वह बदल जाए ऐसी नहीं है।

वाइफ, वह क्या चीज़ है?

प्रश्नकर्ता : आप बताइए।

दादाश्री : वाइफ इज़ द काउन्टर वेट ऑफ मेन। वह काउन्टर वेट यदि नहीं होगा तो मनुष्य लुढ़क जाएगा।

प्रश्नकर्ता : यह समझ में नहीं आया।

दादाश्री : इंजन में काउन्टर वेट रखा जाता है, वर्ना इंजन चलते चलते लुढ़क जाएगा। इसी तरह मनुष्य का काउन्टर वेट स्त्री है। स्त्री होगी तो लुढ़केगा नहीं। वर्ना दौड़-धूप करके भी कोई ठिकाना नहीं रहता, आज यहाँ तो कल कहाँ से कहाँ निकल गया होता। यह स्त्री है इसलिए वह वापस घर आता है, वर्ना वह घर आता क्या?

प्रश्नकर्ता : नहीं आता।

दादाश्री : स्त्री काउन्टर वेट है उसका।

टकराव, आखिर में अंतवाले

प्रश्नकर्ता : दोपहर को सुबहवाला टकराव भूल जाते हैं और शाम को फिर नया होता है।

दादाश्री : हम यह जानते हैं, कि टकराव किस शक्ति से होते हैं। वह उल्टा बोलती है, उसमें कौन सी शक्ति काम कर रही है? बोलने के बाद फिर 'एडजस्ट' हो जाते हैं, वह सब ज्ञान से समझ में आए, ऐसा है। फिर भी संसार में 'एडजस्ट' होना है। क्योंकि प्रत्येक चीज़ अंतवाली होती है। और मान लो वह चीज़ लंबे अरसे तक चले फिर भी आप उसे 'हेल्प' नहीं करते, बल्कि ज़्यादा नुकसान पहुँचाते हो। आप अपना खुद का और सामनेवाले का भी नुकसान कर रहे हो।

वर्ना प्रार्थना का 'एडजस्टमेन्ट'

प्रश्नकर्ता : सामनेवाले को समझाने के लिए मैंने अपना पुरुषार्थ किया, फिर वह समझे-ना समझे, वह उसका पुरुषार्थ?

दादाश्री : अपनी ज़िम्मेदारी इतनी ही है कि हम उसे समझाएँ। फिर वह नहीं समझे तो उसका उपाय नहीं है। फिर आप इतना कहना कि, 'हे दादा भगवान! इसे सद्बुद्धि दीजिए।' इतना कहना चाहिए। उसे बीच में नहीं लटका सकते। यह कोई गप्प नहीं। यह 'दादाजी' का 'एडजस्टमेन्ट' का विज्ञान है, ग़ज़ब का है यह 'एडजस्टमेन्ट'। और जहाँ 'एडजस्ट' नहीं होंगे, वहाँ उसका स्वाद तो आता ही होगा आपको? 'डिसएडजस्टमेन्ट' ही मूर्खता है। क्योंकि वह समझता है कि मैं अपना स्वामित्व नहीं छोडूँगा और मेरा ही वर्चस्व होना चाहिए। ऐसा मानने पर सारी ज़िंदगी भूखा मरेगा और एक दिन थाली में 'पोइजन' आ गिरेगा! सहजरूप से जो चलता है, उसे चलने दो! यह तो कलियुग है। वातावरण ही कैसा है?! इसलिए जब बीवी कहे कि, 'आप नालायक हैं।' तो कहना, 'बहुत अच्छे।'

टेढ़ों के साथ एडजस्ट हो जाओ

प्रश्नकर्ता : व्यवहार में रहना है, इसलिए 'एडजस्टमेन्ट' एक पक्षीय तो नहीं होना चाहिए न?

दादाश्री : व्यवहार तो उसी को कहेंगे कि, एडजस्ट हो जाएँ ताकि

पड़ोसी भी कहें कि 'सभी घरों में झगड़े होते हैं, मगर इस घर में झगड़ा नहीं है।' उसका व्यवहार सर्वोत्तम कहलाएगा। जिसके साथ रास न आए, वहीं पर शक्तियाँ विकसित करनी हैं। अनुकूल है, वहाँ तो शक्ति है ही। प्रतिकूल लगना, वह तो कमज़ोरी है। मुझे सबके साथ क्यों अनुकूलता रहती है? जितने एडजस्टमेन्ट लोगे, उतनी शक्तियाँ बढ़ेंगी और अशक्तियाँ टूट जाएँगी। सच्ची समझ तो तभी आएगी, जब सभी उल्टी समझ को ताला लग जाएगा।

नरम स्वभाववालों के साथ तो हर कोई एडजस्ट होगा मगर टेढ़े, कठोर, गर्म मिज़ाज लोगों के साथ, सभी के साथ एडजस्ट होना आया तो काम बन गया। कितना ही नंगा-लुच्चा मनुष्य क्यों न हो, फिर भी उसके साथ एडजस्ट होना आ जाए, दिमाग़ फिरे नहीं, वह काम का। भड़क जाओ तो नहीं चलेगा। संसार की कोई चीज़ हमें 'फिट' नहीं होगी, हम ही उसे 'फिट' हो जाएँ तो दुनिया सुंदर है और उसे 'फिट' करने गए तो दुनिया टेढ़ी है। इसलिए एडजस्ट एवरीव्हेर! आप उसे 'फिट' हो जाओ तो कोई हर्ज नहीं है।

डोन्ट सी लॉ, सेटल !

'ज्ञानी' तो सामनेवाला टेढ़ा हो तो भी उसके साथ एडजस्ट हो जाते हैं। 'ज्ञानीपुरुष' को देखकर चले तो सभी तरह के एडजस्टमेन्ट लेना सीख जाएगा। इसके पीछे का साइन्स क्या कहता है कि वीतराग हो जाओ, राग-द्वेष मत करो। यह तो भीतर थोड़ी आसक्ति रह जाती है, इसलिए मार पड़ती है। व्यवहार में जो एकपक्षीय-निस्पृह हो चुके हों, वे टेढ़े कहलाते हैं। आपको ज़रूरत हो, तब सामनेवाला यदि टेढ़ा हो, फिर भी उसे मना लेना चाहिए। स्टेशन पर मज़दूर की ज़रूरत हो और वह आनाकानी कर रहा हो, फिर भी उसे चार आने ज़्यादा देकर मना लेना होगा और नहीं मनाएँगे तो वह बैग हमें खुद ही उठाना पड़ेगा न!

डोन्ट सी लॉज़, प्लीज़ सेटल। सामनेवाले को सेटलमेन्ट लेने को कहना, 'आप ऐसा करो, वैसा करो' ऐसा कहने के लिए वक्त ही कहाँ है? सामनेवाले की सौ भूलें हो, फिर भी आपको तो खुद ही भूल है' कहकर

आगे बढ़ जाना है। इस काल में लॉ थोड़े ही देखा जाता है? यह तो आखिरी हद तक पहुँच चुका है। जहाँ देखें वहाँ दौड़धाम, भागमभाग! लोग उलझ गए हैं। घर जाए तो वाइफ की शिकायतें, बच्चों की शिकायतें, नौकरी पर जाए तो सेठजी की शिकायतें, रेल में जाए तो भीड़ में धक्के खाता है। कहीं भी चैन नहीं। चैन तो होना चाहिए न? कोई लड़ पड़े तो उस पर दया आनी चाहिए कि 'अरे, इसे कितना तनाव होगा कि लड़ पड़ा!' जो अकुलाएँ, वे सभी कमज़ोर हैं।

शिकायत? नहीं, 'एडजस्ट'

ऐसा है न, घर में भी 'एडजस्ट' होना आना चाहिए। आप सत्संग से देर से घर जाओ तो घरवाले क्या कहेंगे? 'थोड़ा-बहुत तो समय का ध्यान रखना चाहिए न?' तब हम जल्दी घर जाएँ तो उसमें क्या गलत है? बैल नहीं चले तो तेली उसे आर चुभोता है, इसके बजाय तो वह आगे चलता रहे तो तेली उसे आर नहीं चुभोएगा न! वर्ना तेली आर चुभोएगा और इसे चलना पड़ेगा। चलना तो पड़ेगा न? आपने देखा है ऐसा? आर जिसमें आगे कील होती है उसे चुभोते हैं, गूंगा प्राणी क्या करे? वह किससे शिकायत करे?

इन लोगों को यदि कोई आर चुभो दे तो उन्हें बचाने दूसरे लोग निकल आएँगे, लेकिन वह गूंगा प्राणी किसे शिकायत करे? अब उसे ऐसा मार खाने का वक्त क्यों आया? क्योंकि पहले बहुत शिकायतें की थीं। उसका यह परिणाम आया है। उस समय सत्ता में आया, तब शिकायतें ही शिकायतें की थीं। अब सत्ता में नहीं है, इसलिए शिकायत किए बगैर रहना है। इसलिए अब 'प्लस-माइनस' कर डालो। इसके बजाय फ़रियादी ही मत बनना। उसमें क्या गलत है? फ़रियादी बनेंगे तभी मुजरिम होने का वक्त आएगा न? हमें तो मुजरिम भी नहीं बनना है और फ़रियादी भी नहीं बनना है न! सामनेवाला गाली दे गया, उसे जमा कर लेना। फ़रियादी होना ही नहीं है। आपको क्या लगता है? फ़रियादी बनना ठीक है? लेकिन उसके बजाय पहले से ही 'एडजस्ट' हो जाएँ, तो क्या गलत?

उल्टा बोल लेने के बाद

व्यवहार में 'एडजस्टमेन्ट' लेना, उसे इस काल में 'ज्ञान' कहा है। हाँ, एडजस्टमेन्ट लेना एडजस्टमेन्ट टूट रहा हो, तब भी एडजस्ट कर लेना। आपने उसको भला-बुरा बोल दिया। अब बोलना, यह आपके बस की बात नहीं है। आपसे भी कभी बोल लिया जाता है या नहीं बोला जाता? बोल तो दिया, लेकिन बाद में तुरन्त ही पता तो चल जाता है कि गलती हो गई। पता चले बगैर नहीं रहता, लेकिन उस समय हम एडजस्ट करने नहीं जाते। बाद में तुरंत उसके पास जाकर कहना चाहिए कि, 'भैया, मेरे मुँह से उस वक्त भला-बुरा निकल गया था, मेरी भूल हो गई, इसलिए क्षमा करना!' तो एडजस्टमेन्ट हो गया। इसमें कोई हर्ज है?

प्रश्नकर्ता : नहीं, कोई हर्ज नहीं।

हर जगह एडजस्टमेन्ट

प्रश्नकर्ता : कई बार ऐसा होता है कि एक ही समय में दो व्यक्तियों के साथ एक ही बात पर 'एडजस्टमेन्ट' लेना हो, तो उस समय दोनों को कैसे पहुँच पाएँ?

दादाश्री : दोनों के साथ (एडजस्टमेन्ट) ले सकते हैं। अरे, सात लोगों के साथ लेना हो तो भी लिया जा सकता हैं। एक पूछे, 'मेरा क्या किया?' तब कहो, 'हाँ, भाई, आपके कहे मुताबिक करूँगा।' दूसरे को भी ऐसा कहना कि, 'आप कहेंगे वैसा ही करेंगे।' 'व्यवस्थित' से बाहर होनेवाला नहीं है। इसलिए कुछ भी करके झगड़ा मत होने देना। मुख्य चीज़ 'एडजस्टमेन्ट' है। 'हाँ' से मुक्ति है। हमने 'हाँ' कहा, फिर भी 'व्यवस्थित' से बाहर कुछ होनेवाला है? लेकिन 'नहीं' कहा तो महा-*उपाधि*!

घर में पति-पत्नी दोनों निश्चय करें कि मुझे 'एडजस्ट' होना है, तो दोनों का हल आ जाएगा। वह ज़्यादा खींचतान करे, तब हम 'एडजस्ट' हो जाएँ तो हल निकल आएगा। एक आदमी का हाथ दुःख रहा था, लेकिन

उसने दूसरे को नहीं बताया, और दूसरे हाथ से उस हाथ को दबाकर 'एडजस्ट' किया! इस प्रकार 'एडजस्ट' हो जाएँ तो हल आएगा। यदि 'एडजस्ट एवरीव्हेर' नहीं हुए तो सभी पागल हो जाओगे। सामनेवालों को छेड़ते रहे, इसी वजह से पागल हुए हैं। कुत्ते को एक बार छेड़ें, दो बार, तीन बार छेड़ें, तब तक वह हमारा लिहाज करेगा, लेकिन फिर बार-बार छेड़ते रहेंगे तो वह भी हमें काट लेगा। वह भी समझ जाएगा कि यह रोज़ाना छेड़ता है, यह नालायक है, बेहया है। यह समझने जैसा है। ज़रा सा भी झंझट ही नहीं करना है, 'एडजस्ट एवरीव्हेर'।

जिसे 'एडजस्ट' होने की कला आ गई, वह दुनिया से 'मोक्ष' की ओर मुड़ गया। 'एडजस्टमेन्ट' हुआ, उसीका नाम ज्ञान। जो 'एडजस्टमेन्ट' सीख गया, वह पार उतर गया। जो भुगतना है, वह तो भुगतना ही है। लेकिन जिसे 'एडजस्टमेन्ट' लेना आ जाए, उसे अड़चन नहीं होगी, हिसाब साफ हो जाएगा। कभी लुटेरे मिल जाएँ, तब उनके साथ डिसएडजस्ट होंगे तो वे मारेंगे। उसके बजाय हम तय करें कि उनसे 'एडजस्ट' होकर काम लेना है। फिर उनसे पूछें कि, 'भैया, तुम्हारी क्या इच्छा है?' 'देख भाई, हम तो यात्रा पर निकले हैं।' (इस प्रकार) उनके साथ 'एडजस्ट' हो जाएँ।

पत्नी ने भोजन बनाया हो, उसमें गलती निकाले तो वह ब्लन्डर्स। ऐसे भूल नहीं निकालते। मानो खुद कभी गलती ही न करता हो, ऐसे बात करता है। हाउ टू एडजस्ट? एडजस्टमेन्ट लेना चाहिए। जिसके साथ हमेशा रहना है, उसके साथ एडजस्टमेन्ट नहीं लेना चाहिए? खुद से किसीको दुःख पहुँचे, तो वह भगवान महावीर का धर्म कैसे कहलाएगा ? और घर के लोगों को तो, अवश्य ही, दुःख होना ही नहीं चाहिए।

घर एक बग़ीचा

एक भाई मुझसे कहने लगा कि, 'दादाजी, मेरी बीवी घर में ऐसा करती है, वैसा करती है।' तब मैंने उसे कहा कि आपकी पत्नी से पूछेंगे तो वह क्या कहेगी कि 'मेरा पति ही कमअक़्ल का है।' अब इसमें आप अपने

अकेले का ही न्याय क्यों खोजते हो? तब उस भाई ने कहा कि, 'मेरा तो घर बिगड़ गया है, बच्चे बिगड़ गए हैं, बीवी बिगड़ गई है।' मैंने कहा, 'कुछ भी नहीं बिगड़ा है।' आपको वह 'देखना' नहीं आता है। आपको अपना घर 'देखना' आना चाहिए। हर एक की प्रकृति को पहचानना आना चाहिए।

घर में एडजस्टमेन्ट नहीं हो पाता, उसकी वज़ह क्या है? परिवार में ज़्यादा सदस्य हों, उन सबके साथ ताल-मेल नहीं रहता। बात का बतंगड़ बन जाता है, फिर। वह किसलिए? मनुष्यों का जो स्वभाव है, वह एक जैसा नहीं होता। जैसा युग होता है, वैसा स्वभाव हो जाता है। सतयुग में आपसी मेल होता है। घर में सौ सदस्य हों, फिर भी दादाजी कहें, उस अनुसार सब चलते थे और इस कलियुग में तो दादाजी कुछ कहें तो उन्हें बड़ी-बड़ी गालियाँ सुनाते हैं। बाप कुछ कहे तो बाप को भी वैसा ही सुनाते हैं।

अब मनुष्य तो मनुष्य ही है, लेकिन आपको पहचानना नहीं आता। घर में पचास मनुष्य हों, लेकिन आपको पहचानना नहीं आया, इसलिए बखेड़ा होता रहता है। उन्हें पहचानना तो चाहिए न। घर में एक व्यक्ति किच-किच किया करता हो तो वह तो उसका स्वभाव ही है। इसलिए आपको एक बार समझ लेना चाहिए कि यह ऐसा है। आप सचमुच पहचान जाते हो कि यह ऐसा ही है? फिर उसमें आगे कुछ जाँच करने की ज़रूरत है क्या? आप पहचान गए, फिर कुछ जाँच करने की ज़रूरत नहीं रहती। कुछ लोगों को रात को देर से सोने की आदत होती है और कुछ लोगों जल्दी सोने की आदत होती है, तो उन दोनों का मेल किस तरह होगा? और परिवार में सभी सदस्य साथ रहते हों तो क्या होगा? घर में एक व्यक्ति ऐसा कहनेवाला निकले कि 'आप कमअक़्ल के हैं', तब आपको ऐसा समझ लेना चाहिए कि यह ऐसा ही बोलनेवाला है। इसलिए आपको एडजस्ट हो जाना चाहिए। इसके बजाय अगर आप प्रत्युत्तर दोगे तो आप थक जाओगे। क्योंकि वह तो आप से टकराया, लेकिन आप भी उससे टकराएँगे तो आपकी भी आँखे नहीं है, ऐसा प्रमाणित हो गया न? मैं कहना चाहता हूँ कि प्रकृति का साइन्स जानो। बाकी, आत्मा तो अलग वस्तु है।

विभिन्न, बगीचे के फूलों के रंग-सुगंध

आपका घर तो बगीचा है। सतयुग, त्रेता और द्वापर युग में घर खेतों के समान होते थे। किसी खेत में सिर्फ गुलाब ही, किसी खेत में सिर्फ चंपा। आजकल घर बगीचे जैसा हो गया है। इसलिए हमें यह मोगरा है या गुलाब, ऐसी जाँच नहीं करनी चाहिए? सतयुग में क्या था कि एक घर में गुलाब होता तो सभी गुलाब और दूसरे घर में एक मोगरा तो घर के सभी मोगरे, ऐसा था। एक परिवार के सभी गुलाब के पौधे, एक खेत की तरह, इसलिए दिक्कत नहीं होती थी और आजकल तो बगीचे जैसा हो गया है। एक ही घर में एक गुलाब जैसा, दूसरा मोगरे जैसा। इसलिए गुलाब चिल्लाता है कि तू मेरे जैसा क्यों नहीं है? तेरा रंग देख, कैसा सफेद, मेरा रंग कितना सुंदर है! तब मोगरा कहेगा कि तुझमें तो सिर्फ काँटे हैं। अब गुलाब होगा तो काँटे होंगे, मोगरा होगा तो काँटे नहीं होंगे। मोगरे का फूल सफेद होगा, गुलाब का फूल गुलाबी होगा, लाल होगा। इस कलियुग में एक ही घर में अलग-अलग पौधे होते हैं। यानी कि घर बगीचे जैसा हो गया है। लेकिन यह तो देखना ही नहीं आता, उसका क्या हो? उसका दुःख ही होगा न! जगत् की यह देखने की दृष्टि नहीं है। बाकी, कोई बुरा होता ही नहीं है। ये मतभेद तो खुद के अहंकार की वजह से हैं। जिन्हें देखना नहीं आता, उन्हें अहंकार है। मुझे अहंकार नहीं है, इसलिए मुझे सारे संसार में किसी के साथ मतभेद ही नहीं होता है। मुझे देखना आता है कि यह 'गुलाब' है, यह 'मोगरा' है, यह 'धतूरा' है, यह कड़वी 'कुँदरू' का फूल है। ऐसा सब मैं पहचानता हूँ। यानी बगीचे जैसा हो गया है। यह तो तारीफ़ के लायक हुआ न? आपको क्या लगता है?

प्रश्नकर्ता : ठीक है।

दादाश्री : ऐसा है न, प्रकृति में परिवर्तन नहीं होता। वह तो वही का वही माल, उसमें फ़र्क़ नहीं आता। हम प्रत्येक प्रकृति को जान चुके हैं, इसलिए तुरंत पहचान लेते हैं। इसलिए हम हर एक के साथ उसकी प्रकृति के अनुसार रहते हैं। सूर्य के साथ अगर हम दोपहर बारह बजे दोस्ती करेंगे तो

क्या होगा? इस प्रकार यदि हम समझ लें कि यह ग्रीष्म का सूर्य है, यह जाड़े का सूर्य है, ऐसा सब समझ लें तो फिर कठिनाई होगी?

हम प्रकृति को पहचानते हैं, इसलिए आप टकराना चाहो तो भी मैं टकराने नहीं दूँगा, मैं खिसक जाऊँगा। वर्ना दोनों का एक्सिडेन्ट हो जाएगा और दोनों के स्पेयरपार्ट्स टूट जाएँगे। किसी का बंपर टूट जाए तो भीतर बैठे हुए की क्या हालत होगी? बैठनेवाले की तो दुर्दशा हो जाएगी न! इसलिए प्रकृति को पहचानो। घर में सभी की प्रकृतियाँ पहचान लेनी है।

इस कलियुग में प्रकृति खेत जैसी नहीं है, बगीचे जैसी है। एक चंपा, दूसरा गुलाब, मोगरा, चमेली वगैरह। इसलिए सभी फूल लड़ते हैं। एक कहेगा कि मेरा ऐसा है, तो दूसरा कहेगा कि मेरा ऐसा है। तब एक कहेगा कि तुझमें काँटे हैं, चला जा, तेरे साथ कौन खड़ा रहेगा? ऐसे झगड़े चलते रहते हैं।

काउन्टरपुली की करामात

हमें पहले अपना मत नहीं रखना चाहिए। सामनेवाले से पूछना कि इसके बारे में आप क्या कहना चाहते हैं? सामनेवाला अपनी बात पर अड़ा रहे, तो मैं अपनी बात छोड़ देता हूँ। हमें तो यही देखना है कि कैसे भी, सामनेवाले को दुःख न हो। अपना अभिप्राय सामनेवाले पर नहीं थोपना है। सामनेवाले का अभिप्राय आपको लेना चाहिए। हम तो सभी के अभिप्राय लेकर 'ज्ञानी' बने हैं। मैं अपना अभिप्राय किसी पर थोपने जाऊँ तो मैं ही कच्चा पड़ जाऊँगा? अपने अभिप्राय से किसीको दुःख नहीं होना चाहिए।

आपके 'रिवोल्यूशन' अठारह सौ के हों और सामनेवाले के छः सौ के हों और आप अपना अभिप्राय उस पर थोप दो, तो उसका 'इंजन' टूट जाएगा। उसके सारे 'गीयर' बदलने पड़ेंगे।

प्रश्नकर्ता : 'रिवोल्यूशन' यानी क्या?

दादाश्री : यह जो सोचने की स्पीड है, वह हर एक की अलग-अलग होती है। कुछ घटित हुआ हो तो मन एक मिनट में तो कितना ही दिखा देता

है, उसके सारे पर्याय 'एट ए टाइम' दिखा देता हैं। इन बड़े-बड़े प्रेसिडन्टों के एक मिनट के बारह सौ 'रिवोल्यूशन' घूमते हैं और हमारे पाँच हजार हैं और भगवान महावीर के लाख 'रिवोल्यूशन' घूमते थे!

यह मतभेद होने का कारण क्या है? आपकी पत्नी के सौ 'रिवोल्यूशन' हों और आपके पाँच सौ 'रिवोल्यूशन' हों और आपको बीच में 'काउन्टर पुली' डालना नहीं आता, इसलिए चिनगारियाँ निकलती हैं और झगड़े होते हैं। अरे ! कभी-कभी तो 'इंजन' भी टूट जाता है। 'रिवोल्यूशन' समझे आप? आप इस मज़दूर से बात करो तो आपकी बात उस तक नहीं पहुँचती। उसके 'रिवोल्यूशन' पचास, और आपके पाँच सौ हैं। किसी के हज़ार होते हैं, किसी के बारह सौ होते हैं, जैसा जिसका डेवलपमेन्ट होगा, उसके अनुसार 'रिवोल्यूशन' होते हैं। बीच में 'काउन्टर पुली' डालोगे, तभी उस तक आपकी बात पहुँचेगी। 'काउन्टर पुली' यानी आपको बीच में पट्टा डालकर आपके रिवोल्यूशन घटाने पड़ेंगे। मैं हर एक मनुष्य के साथ 'काउन्टर पुली' डाल देता हूँ। सिर्फ अहंकार निकाल देने से ही काम होगा, ऐसा नहीं है। 'काउन्टर पुली' भी हर एक के साथ डालनी पड़ती है। इसी कारण मेरा किसी से मतभेद ही नहीं होता न! मैं जानता हूँ कि इस भाई के इतने ही 'रिवोल्युशन' हैं। इसलिए उसके अनुसार मैं 'काउन्टर पुली' ड़ाल दूँ। मेरा तो छोटे बच्चे के साथ भी बहुत जमता है। क्योंकि मैं उसके साथ चालीस रिवोल्यूशन लगाकर बात करता हूँ। इससे मेरी बात उस तक पहुँचती है, वर्ना वह 'मशीन' टूट जाएगी।

प्रश्नकर्ता : कोई भी सामनेवाले के लेवल पर आएगा, तभी बात होगी ?

दादाश्री : हाँ, उसके रिवोल्यूशन पर आएगा तभी बात होगी। आपके साथ बातचीत करते हुए हमारे रिवोल्यूशन कहाँ से कहाँ तक घूम आए! सारी दुनिया घूम आते हैं! आपको 'काउन्टर पुली' डालना नहीं आता, उसमें कम 'रिवोल्यूशन'वाले इंजन का क्या दोष? वह तो आपका दोष कि आपको 'काउन्टर पुली' डालना नहीं आया!

सीखो फ्यूज़ लगाना

इतना ही पहचान लेना कि यह 'मशीनरी' कैसी है! उसका 'फ्यूज़' उड़ जाए तो किस प्रकार फ्यूज़ लगाना है। सामने वाले की प्रकृति से 'एडजस्ट' होना आना चाहिए। हमारा तो, अगर सामनेवाले का 'फ्यूज़' उड़ जाए, तब भी एडजस्टमेन्ट होता है। लेकिन सामने वाले का 'एडजस्टमेन्ट' टूट जाए तो क्या होगा? 'फ्यूज़' चला गया, फिर तो वह दीवार से टकराएगा, दरवाजे से टकराएगा, लेकिन तार नहीं टूटा है, कनेक्शन नहीं टूटा है। इसलिए अगर कोई फ्यूज़ लगा दे तो फिर सब ठीक हो जाएगा, वर्ना तब तक वह उलझता रहेगा।

जीवन छोटा और धांधली ज़्यादा

सबसे बड़ा दु:ख क्या है? 'डिसएडजस्टमेन्ट'। वहाँ 'एडजस्ट एवरीव्हेयर' कर लें तो क्या हर्ज है?

प्रश्नकर्ता : उसमें तो पुरुषार्थ चाहिए।

दादाश्री : कोई पुरुषार्थ नहीं चाहिए। मेरी आज्ञा का पालन करे कि दादाजी ने कहा है कि 'एडजस्ट एवरीव्हेर', तो 'एडजस्ट' होता रहेगा। बीवी कहे कि, 'तुम चोर हो'। तो कहना कि 'यू आर करेक्ट।' बीवी डेढ़ सौ की साड़ी लाने को कहे, तो आप पच्चीस रूपये ज़्यादा देना तो फिर छ: महीने तक तो चलेगा!

ऐसा है, ब्रह्माजी के एक दिन, उतनी हमारी सारी ज़िंदगी! ब्रह्माजी के एक दिन के बराबर जीवन और यह क्या धांधली? यदि ब्रह्माजी के सौ साल जीना हो तब तो समझे कि, 'ठीक है। एडजस्ट क्यों हों?' 'दावा कर' कहेंगे। लेकिन यह तो जल्दी निपटाना है, इसका क्या करना चाहिए? 'एडजस्ट' हो जाएँगे या फिर 'दावा दायर कर' कहेंगे? मगर यह तो एक ही दिन है, यह तो जल्दी निपटाना है। जो कार्य जल्दी निपटाना हो, उसका करना पड़ेगा? 'एडजस्ट' होकर छोटा कर देना चाहिए, वर्ना बढ़ता जाएगा या नहीं बढ़ता जाएगा? बीवी के साथ लड़ने के बाद रात को नींद आएगी क्या? और सुबह अच्छा नाश्ता भी नहीं मिलेगा।

अपनाओ ज्ञानी की ज्ञानकला!

किसी दिन वाइफ कहे, 'मुझे वह साड़ी नहीं दिलवाओगे? मुझे वह साड़ी दिलवानी पड़ेगी।' तब पति पूछेगा, 'तूने कितनी क़ीमत की साड़ी देखी थी?' तब वाइफ कहेगी, 'बाईस सौ की है, ज़्यादा नहीं।' तब वह कहेगा, 'तुम बाईस सौ की कहती हो लेकिन मैं अभी रूपये लाऊँ कैसे? अभी पैसों का जुगाड़ नहीं है, दो सौ-तीन सौ की होती तो दिलवा देता, लेकिन तुम बाईस सौ कह रही हो।' वह रूठकर बैठी रही, अब क्या दशा होगी फिर! मन में ऐसा भी होता है कि अरे, इससे तो शादी नहीं की होती तो अच्छा था। शादी के बाद पछताए, वह किस काम का? अर्थात् ऐसे दु:ख हैं।

प्रश्नकर्ता : आप ऐसा कहना चाहते हैं कि बीवी को बाईस सौ की साड़ी दिलवा देनी चाहिए?

दादाश्री : दिलवाना या नहीं दिलवाना, वह आप पर निर्भर करता है। रूठकर हर रोज रात को 'खाना नहीं पकाऊँगी' कहेगी, तब आप क्या करोगे? बावर्ची कहाँ से लाओगे? इसलिए फिर कर्ज़ लेकर भी साड़ी दिलवानी पड़ेगी न?

आप कुछ ऐसा कर दो कि वह खुद ही साड़ी नहीं लाए। यदि आपको महीने के आठ सौ रूपये मिलते हैं, तो आप हज़ार रूपये अपने जेबखर्च के लिए रखकर सात हज़ार रूपये उन्हें दे देना। क्या फिर वह हमसे कहेगी कि साड़ी दिलवाइए? और कभी बल्कि आप मज़ाक करो कि 'वह साड़ी बहुत अच्छी थी, क्यों नहीं लातीं?' उसका प्रबंध उसे खुद ही करना होगा। यदि प्रबंध हमें करना हो, तब वह हम पर ज़ोर चलाएगी। यह सारी कला मैंने 'ज्ञान' होने से पहले सीख ली थी। बाद में 'ज्ञानी' हुआ। सभी कलाएँ मेरे पास आ गईं, तब मुझे 'ज्ञान' हुआ। अब बोलो, यह कला नहीं है, इसलिए ही ये दु:ख हैं न! आपको क्या लगता है?

प्रश्नकर्ता : हाँ, ठीक है।

दादाश्री : यह आपकी समझ में आया? इसमें भूल हमारी ही है न?

कला नहीं है इसलिए न! कला सीखने की ज़रूरत है। आप कुछ बोले नहीं ?!

क्लेश का मूल कारण : अज्ञानता

प्रश्नकर्ता : लेकिन क्लेश होने का कारण क्या है? स्वभाव नहीं मिलता, इसलिए?

दादाश्री : अज्ञानता की वजह से। संसार का मतलब ही यह कि किसी का स्वभाव किसी से मिलता ही नहीं। यह ज्ञान मिलें, उसके लिए एक ही रास्ता है, 'एडजस्ट एवरीव्हेर'! कोई आपको मारे तो भी आप उसे 'एडजस्ट' हो जाना।

हम यह सरल और सीधा रास्ता बता देते हैं। और यह टकराव क्या रोज़-रोज़ होते हैं? वे तो जब अपने कर्मों का उदय हो, तभी होते हैं, उस समय हमें 'एडजस्ट' होना है। घर में पत्नी के साथ झगड़ा हुआ हो तो उसके बाद उसे होटल ले जाकर, खाना खिलाकर खुश कर देना। अब तंत नहीं रहना चाहिए।

संसार की कोई चीज़ हमें फिट (एडजस्ट) नहीं होगी। हम उसे फिट हो जाए तो यह दुनिया सुन्दर है और अगर उसे फिट करने जाएँगे तो दुनिया टेढ़ी है। इसलिए 'एडजस्ट एवरीव्हेर'। हम उसमें फिट हो गए तो कोई हर्ज नहीं है।

दादाजी, पूर्णत : एडजस्टेबल

एक बार कढ़ी अच्छी बनी थी मगर नमक थोड़ा ज़्यादा था। इसलिए फिर मुझे लगा कि इसमें नमक थोड़ा ज़्यादा है, मगर थोड़ी खानी तो पड़ेगी ही न! इसलिए फिर जब हीराबा (दादाजी की पत्नी) अंदर गए, तब मैंने थोड़ा पानी मिला दिया। उन्होंने वह देख लिया,उन्होंने कहा, 'यह क्या किया?' मैंने कहा, 'आप चूल्हे पर रखकर पानी डालती हैं, मैं यहाँ नीचे डालता हूँ।' तब कहे, 'लेकिन मैं तो पानी डालकर उसे उबाल देती हूँ' मैंने कहा, 'मेरे लिए दोनों समान है।' मुझे तो काम से काम है न!

आप मुझसे ग्यारह बजे कहें कि, 'आपको भोजन कर लेना होगा।' मैं कहूँ कि, 'थोड़ी देर के बाद खाऊँ तो नहीं चलेगा?' तब आप कहो कि, 'नहीं, भोजन कर लो, तो काम पूरा हो जाए।' तो मैं तुरंत ही भोजन करने बैठ जाऊँगा। मैं आपसे 'एडजस्ट' हो जाऊँगा।

जो भी थाली में आए वह खा लेना। जो सामने आया, वह संयोग है और भगवान ने कहा है कि संयोग को धक्का मारेगा तो वह धक्का तुझे लगेगा। इसलिए हमारी थाली में हमें नहीं रूचती चीज़ें रखी हों, तो भी उसमें से दो चीज़ें खा लेते हैं। नहीं खाएँ, तो दो के साथ झगड़ा होगा। एक तो, जिसने पकाया हो उसके साथ झंझट होगी, तिरस्कार होगा और दूसरा, खाने की चीज़ के साथ। खाने की चीज़ कहेगी कि, 'मैंने क्या गुनाह किया? मैं तेरे पास आई हूँ, तू मेरा अपमान क्यों कर रहा है? तुझे ठीक लगे उतना ले, मगर मेरा अपमान मत करना।' अब उसे हमें मान नहीं देना चाहिए? हमें तो कोई नहीं रुचती हो, ऐसी चीज़ दें तब भी हम उसे मान देते हैं। क्योंकि एक तो, कोई यों ही कुछ मिलता नहीं, और यदि मिले तो उसे मान देना पड़ता है। कोई चीज़ आपको खाने को दी और आपने उसमें दोष निकाला तो इसमें सुख घटेगा या बढ़ेगा?

जिससे सुख घटता हो ऐसा व्यापार ही नहीं करना चाहिए न! मैं तो कई बार मेरी रूचि की सब्जी नहीं हो, फिर भी खा लेता हूँ और ऊपर से तारीफ करता हूँ कि आज की सब्जी बहुत अच्छी है।

अरे, कई बार तो चाय में शक्कर नहीं हो न, फिर भी हम बोले नहीं। तब लोग कहते हैं कि, 'ऐसा करेंगे न, तो घर में सबकुछ बिगड़ जाएगा।' मैंने कहा कि, 'आप कल देखना न क्या होता है?' तब फिर दूसरे दिन सुनने में आता कि, 'कल चाय में शक्कर नहीं थी, फिर भी आपने हमें कुछ कहा नहीं?' मैंने कहा कि, 'मुझे कहने की क्या ज़रूरत थी? आपको पता चलेगा न! आप नहीं पीतीं तो मुझे कहने की ज़रूरत पड़ेगी। आप पीती हो, फिर मुझे कहने की क्या ज़रूरत?!'

प्रश्नकर्ता : लेकिन कितनी जागृति रखनी पड़ती है, प्रतिक्षण।

दादाश्री : प्रतिक्षण, चौबीसों घंटे जागृति, उसके बाद यह 'ज्ञान' शुरू हुआ। यह 'ज्ञान' यों ही नहीं हुआ! अर्थात् पहले से ही इस प्रकार से सब 'एडजस्टमेन्ट' लिए थे। हो सके, तब तक क्लेश नहीं होने दिया।

एक बार हम नहाने गए, तब गिलास रखना भूल गए। अब यदि हम एडजस्ट नहीं करें तो हम ज्ञानी कैसे? हम एडजस्ट कर लेते हैं। हाथ डाला तो पानी बहुत गरम। नल खोला तो टँकी खाली। फिर हम तो धीरे-धीरे हाथ से पानी चुपड़-चुपड़ कर ठंडा करके नहाए। सभी महात्माओं ने कहा कि, 'आज दादाजी को नहाने में बड़ी देर लगी।' तो क्या करें? पानी ठंडा हो तब न? हम किसी से भी 'यह लाओ और वह लाओ' ऐसा नहीं कहते। एडजस्ट हो जाते हैं। एडजस्ट हो जाना,वही धर्म है। इस दुनिया में तो प्लस-माइनस का एडजस्टमेन्ट करना होता है। माइनस हो वहाँ प्लस और प्लस हो वहाँ माइनस करना होता है। हमारे सयानेपन को भी यदि कोई पागलपन कहे तो हम कहेंगे, 'हाँ, ठीक है।' तुरंत उसे माइनस कर देते हैं।

जिसे एडजस्ट होना नहीं आया, उस मनुष्य को मनुष्य कैसे कहेंगे? जो संयोगों के वश होकर एडजस्ट हो जाए, उस घर में कुछ भी झंझट नहीं होगा। हम भी हीराबा से एडजस्ट होते आए थे न! उनका लाभ उठाना हो तो एडजस्ट हो जाओ। यह तो फायदा भी किसी चीज़ का नहीं, और बैर बाँधेगे, वह अलग। क्योंकि प्रत्येक जीव स्वतंत्र है और खुद सुख खोजने आया है। वह दूसरों को सुख देने नहीं आया है। अब, उसे सुख के बजाय दु:ख मिले तो बैर बाँधता है, फिर वह बीवी हो या बेटा हो।

प्रश्नकर्ता : सुख खोजने आए और दु:ख मिले तो फिर बैर बाँधता है?

दादाश्री : हाँ, वह तो फिर भाई हो या बाप हो, लेकिन अंदर ही अंदर उस बात का बैर बाँधता है। यह दुनिया सारी ऐसी है, बैर ही बाँधती है! स्वधर्म में किसी से बैर नहीं होता।

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में कुछ प्रिन्सिपल (सिद्धांत) होने ही चाहिए। फिर भी संयोगानुसार वर्तन करना चाहिए। संयोगों के साथ एडजस्ट हो जाए, वह मनुष्य। यदि प्रत्येक संयोग में एडजस्टमेन्ट लेना आ जाए तो ठेठ मोक्ष में पहुँचा जा सके, ऐसा ग़ज़ब का हथियार है।

ये दादाजी सूक्ष्म सूझबूझवाले भी हैं, किफायती भी हैं और उदार भी हैं। पूर्णतया उदार हैं। फिर भी 'कम्प्लीट एडजस्टेबल' हैं। दूसरों के लिए उदार, खुद के लिए किफायती और उपदेश के लिए सूक्ष्म सूझबूझवाले। इसलिए सामनेवाले को हमारा गहरी सूझबूझवाला व्यवहार दिखता है। हमारी इकोनोमी एडजस्टेबल होती है, टोपमोस्ट होती है। हम तो पानी का उपयोग भी किफायती से करते हैं। हमारे प्राकृत गुण सहज भाव से होते है।

वर्ना व्यवहार की गुत्थी अटकाएगी

पहले यह व्यवहार सीखना है। व्यवहार की समझ के बिना तो लोग तरह-तरह की मार खाते हैं।

प्रश्नकर्ता : अध्यात्म संबंधी आपकी बात के बारे में तो क्या कहना, मगर व्यवहार में भी आपकी बात 'टॉप' की बात है।

दादाश्री : ऐसा है न, कि व्यवहार में 'टॉप' का समझे बिना कोई मोक्ष में नहीं गया। कितना भी क़ीमती, बारह लाख का आत्मज्ञान हो, मगर क्या व्यवहार छोड़ने वाला है?! वह नहीं छोड़े तो आप क्या करोगे? आप तो 'शुद्धात्मा' हो ही, मगर व्यवहार छोड़े तब न? आप व्यवहार को उलझाते रहते हो। झटपट हल लाओ न?

इस भाई से कहा हो कि, 'जा, दुकान से आइसक्रीम ले आ।' लेकिन आधे रास्ते से वापस आता है। हम पूछें, 'क्यों?' तो वह कहेगा कि, 'रास्ते में गधा मिल गया, अपशकुन हो गए!' अब, उसे ऐसा उल्टा ज्ञान हो गया है, वह हमें निकाल देना चाहिए न? उसे समझाना चाहिए कि 'भाई, गधे में भी भगवान बिराजे हैं, इसलिए अपशकुन कुछ नहीं है। तू गधे का तिरस्कार करेगा तो वह उसके भीतर बिराजे भगवान को पहुँचेगा। तुझे इसका भारी दोष

लगेगा। फिर से ऐसा नहीं होना चाहिए।' इस प्रकार उल्टा ज्ञान हुआ है, उस की वजह से लोग एडजस्ट नहीं हो पाते हैं।

उल्टे को सुल्टाए, वह समकिती

समकिती की निशानी क्या है? तब कहे कि, घर के सभी लोग कुछ उल्टा कर दें, फिर भी वह सही कर दे। प्रत्येक बात में सीधा ही करना, यह समकिती की निशानी है। हमने इस संसार की बहुत सूक्ष्म खोजबीन की है। अंतिम प्रकार की खोजबीन के पश्चात् हम ये सब बातें कर रहे हैं। व्यवहार में कैसे रहना चाहिए, वह भी देते हैं और मोक्ष में कैसे जा सकते हैं, यह भी देते हैं। आपकी अड़चनें किस प्रकार कम हों, यही हमारा हेतु है।

अपनी बात सामनेवाले को 'एडजस्ट' होनी ही चाहिए। अपनी बात सामनेवाले को 'एडजस्ट' नहीं हो तो वह अपनी ही भूल है। भूल सुधरे तो 'एडजस्ट' होगा। वीतरागों की बात 'एवरीव्हेर एडजस्टमेन्ट' की है।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, 'एडजस्ट एवरीव्हेयर' यह जो आपने कहा है, उससे तो अच्छे अच्छों का हल निकल आ जाए!

दादाश्री : सभी का हल आ जाए। हमारे ये जो एक-एक शब्द हैं, वे सभी का शीघ्र हल लानेवाले हैं। वे ठेठ मोक्ष तक ले जाएँगे। इसलिए 'एडजस्ट एवरीव्हेर'!

प्रश्नकर्ता : अभी तक जहाँ अच्छा लगता था, वहाँ सभी एडजस्ट होते थे और आपकी बातों से तो ऐसा लगता है कि जहाँ अच्छा न लगे, वहाँ तू पहले एडजस्ट हो जा।

दादाश्री : 'एवरीव्हेर एडजस्ट' होना है।

दादाजी का ग़ज़ब का विज्ञान !

प्रश्नकर्ता : 'एडजस्टमेन्ट' की जो बात है, उससे पीछे भाव क्या है? फिर कहाँ तक 'एडजस्टमेन्ट' लेना चाहिए?

दादाश्री : भाव शांति का है, हेतु शांति का है। अशांति पैदा नहीं होने देने का कीमिया है। 'दादाजी' का 'एडजस्टमेन्ट' का विज्ञान है। ग़ज़ब का 'एडजस्टमेन्ट' है यह। और जहाँ 'एडजस्ट' नहीं होते, वहाँ आपको उसका स्वाद तो आता ही होगा न?! 'डिसएडजस्टमेन्ट' ही मूर्खता है। 'एडजस्टमेन्ट' को हम न्याय कहते हैं। आग्रह-दुराग्रह, वह कोई न्याय नहीं कहलाता। किसी भी प्रकार का आग्रह, न्याय नहीं है। हम किसी भी बात पर अड़े नहीं रहते। जिस पानी से मूँग पकते हों, उसमें पका लेते हैं। अंत में गटर के पानी से भी पका लेते हैं!

अभी तक एक भी मनुष्य हम से डिसएडजस्ट नहीं हुआ है। और इन लोगों को तो घर के चार सदस्य भी एडजस्ट नहीं होते हैं। यह एडजस्ट होना आएगा या नहीं आएगा? ऐसा हो सकेगा कि नहीं हो सकेगा? हम जैसा देखें ऐसा तो हमें आ जाता है न? इस संसार का नियम क्या है कि जैसा आप देखोगे उतना तो आपको आ ही जाएगा। उसमें कुछ सीखने जैसा नहीं रहता। क्या नहीं आएगा? मैं जो आपको केवल उपदेश देता रहूँ, तो वह नहीं आएगा, लेकिन मेरा आचरण आप देखोगे तो आसानी से आ जाएगा।

यहाँ घर पर 'एडजस्ट' होना नहीं आता और आत्मज्ञान के शास्त्र पढ़ने बैठे होते हैं! छोड़ न! पहले 'यह' सीख न! घर में 'एडजस्ट' होना तो कुछ आता नहीं है। ऐसा है यह संसार।

संसार में और कुछ भले ही न आए, तो कोई हर्ज नहीं। धंधा करना कम आता हो तो हर्ज नहीं है, लेकिन एडजस्ट होना आना चाहिए। अर्थात्, वस्तुस्थिति में एडजस्ट होना सीखना चाहिए। इस काल में एडजस्ट होना नहीं आया तो मारा जाएगा। इसलिए 'एडजस्ट एवरीव्हेर' होकर काम निकाल लेने जैसा है।

- जय सच्चिदानंद

प्राप्तिस्थान

दादा भगवान परिवार

अडालज : त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी, अहमदाबाद- कलोल हाईवे, पोस्ट : अडालज, जि.-गांधीनगर, गुजरात - 382421. फोन : (079) 39830100, E-mail : info@dadabhagwan.org

अहमदाबाद : दादा दर्शन, ५, ममतापार्क सोसाइटी, नवगुजरात कॉलेज के पीछे उस्मानपुरा, अहमदाबाद-380014. फोन : (079) 27540408

राजकोट : त्रिमंदिर, अहमदाबाद-राजकोट हाईवे, तरघड़िया चोकड़ी (सर्कल), पोस्ट : मालियासण, जि.-राजकोट. फोन : 9274111393

भुज : त्रिमंदिर, हिल गार्डन के पीछे, एयरपोर्ट रोड. फोन : (02832) 290123

गोधरा : त्रिमंदिर, भामैया गाँव, एफसीआई गोडाउन के सामने, गोधरा (जि.-पंचमहाल). फोन : (02672) 262300

वडोदरा : दादा मंदिर, १७, मामा की पोल-मुहल्ला, रावपुरा पुलिस स्टेशन के सामने, सलाटवाड़ा, वडोदरा. फोन : (0265) 2414142

मुंबई	: 9323528901	**दिल्ली**	: 9310022350
कोलकता	: 033-32933885	**चेन्नई**	: 9380159957
जयपुर	: 9351408285	**भोपाल**	: 9425024405
इन्दौर	: 9893545351	**जबलपुर**	: 9425160428
रायपुर	: 9425245616	**भिलाई**	: 9827481336
पटना	: 9431015601	**अमरावती**	: 9823127601
बेंगलूर	: 9590979099	**हैदराबाद**	: 9989877786
पूना	: 9860797920	**जलंधर**	: 9463542571

U.S.A. : Dada Bhagwan Vignan Institute :
100, SW Redbud Lane, Topeka, Kansas 66606
Tel. : +1 877-505 DADA (3232)
Email : info@us.dadabhagwan.org

U.K. : +44 330 111 DADA (3232) **UAE** : +971 557316937
Kenya : +254 722 722 063 **Singapore** : +65 81129229
Australia : +61 421127947 **NZ** : +64 21 0376434

Website : www.dadabhagwan.org

एडजस्ट एवरीव्हेयर

संसार में और कुछ नहीं आए तो हर्ज नहीं लेकिन एडजस्ट होना तो आना ही चाहिए। सामनेवाला 'डिसएडजस्ट' होता रहे, पर आपको एडजस्ट होना आ जाए तो कोई दुःख ही नहीं रहेगा। इसलिए 'एडजस्ट एवरीव्हेयर'! सभी के साथ एडजस्टमेन्ट हो, यही सब से बड़ा धर्म है। इस काल में तो भिन्न-भिन्न प्रकृतियाँ हैं, तो फिर एडजस्ट हुए बिना कैसे चलेगा?

हमने इस संसार की बहुत सूक्ष्म शोध की है। अंतिम प्रकार की शोध करने के बाद हम ये सब बातें कर रहे हैं। व्यवहार में कैसे रहना चाहिए, वह भी बताते हैं और मोक्ष में कैसे जा सकते हैं, यह भी बताते हैं। आपकी अड़चनें किस प्रकार कम हों, यही हमारा हेतु है।

- दादाश्री

ISBN 978-81-89725-95-2
9 788189 725952
Printed in India
Price ₹7
dadabhagwan.org